राष्ट्रीय सहारा
www.samaylive.com
सच कहने की हिम्मत
राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण
हरादून • वाराणसी से प्रकाशित
लखनऊ | बुधवार • 4 सितम्बर • 2013

उत्पादन में जिला गन्ना अधिकारियों का योगदान महत्वपूर्ण : डा. सोलोमन

लखनऊ (एसएनबी)। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन ने कहा कि प्रदेश में गन्ना एक प्रमुख नकदी फसल है जो लाखों किसानों के लिए आय का प्रमुख स्रोत है। वर्तमान में गन्ना पैदावार की स्थिति बहुत ज्यादा अच्छी नहीं है और स्थिति को बेहतर बनाना एक बहुत बड़ी चुनौती है। इस चुनौती को पूरा करने में जिला गन्ना अधिकारियों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। डा. सोलोमन संस्थान की ओर से गन्ना उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर संबोधित कर रहे थे।

■ भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में जिला गन्ना अधिकारियों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

जिला गन्ना अधिकारियों का यह प्रशिक्षण लाल बहादुर शास्त्री गन्ना किसान संस्थान की ओर से प्रायोजित किये जा रहा है। इस प्रशिक्षण में लखीमपुर खीरी, सिद्धार्थनगर, हापुड़, सीतापुर, देवरिया, गोण्डा, सुल्तानपुर, मुरादाबाद, अमरोहा, बाराबंकी, फैजाबाद, वाराणसी व रामपुर के जिला गन्ना अधिकारियों तथा गन्ना किसान संस्थान के उप निदेशक डा. एनके कमल, वैज्ञानिक अधिकारी डा. सुचिता सिंह तथा अन्य अधिकारी व कर्मचारी भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर डा. सोलोमन ने जिला गन्ना अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रदेश में औसत गन्ना उपज 60 टन प्रति हेक्टेयर है जो राष्ट्रीय औसत (70 टन प्रति हेक्टेयर) से कम है तथा दक्षिण भारत के राज्यों के औसत उपज (80-90 टन प्रति हेक्टेयर) से बहुत कम है। यहां चीनी परता भी 9.25 प्रतिशत है जो काफी कम है। इस कारण प्रदेश में गन्ना एवं चीनी उद्योगन की स्थिति अच्छी नहीं है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2030 तक देश में 550 मिलियन टन गन्ना और 32 मिलियन टन चीनी उत्पादन करने की आवश्यकता होगी। इसमें प्रदेश को सबसे बड़ा गन्ना उत्पादक राज्य होने के नाते महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। इस दिशा में जिला गन्ना अधिकारियों की जिम्मेदारी एवं योगदान बहुत अहम है। उम्मीद है इस प्रशिक्षण में नवीनतम गन्ना उत्पादन तकनीकों में भाग ले रहे जिला गन्ना अधिकारी पूरी जानकारी प्राप्त करने के बाद अपने-अपने जिलों में गन्ना उत्पादन बेहतर करने में अधिक सार्थक भूमिका निभा पाएंगे।

प्रशिक्षण के समन्वयक व वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एके साह ने कहा कि प्रशिक्षण में जिला गन्ना अधिकारियों को गन्ना उत्पादन की नवीनतम तकनीकों में उन्नत प्रजातियां, बेहतर उत्पादन तथा चीनी परता के लिए आवश्यक तकनीकों, बोआई विधियां, पोषक तत्व प्रबन्धन, गन्ना कटाई उपरान्त प्रबन्धन, गन्ना क्षेत्र एवं उत्पादन बढ़ाने के लिए संचार विधियां, गन्ना खेती यंत्र इत्याधि पर विस्तृत एवं रोचक जानकारी दी जाएगी।

कल्पतरु एक्सप्रेस
www.kalptaruexpress.com
लखनऊ, बुधवार, 4 सितम्बर 2013

उत्पादन की चुनौतियों से निपटने के लिए सीखेंगे नये गुर

कल्पतरु समाचार सेवा

लखनऊ। देश को वर्ष 2030 तक 550 मिलियन टन गन्ना और 32 मिलियन टन चीनी की जरूरत होगी। उप्र प्रदेश में गन्ना किसानों की आय का एक प्रमुख स्रोत है। इसके साथ ही यह नकदी फसल भी कही जाती है। गन्ना उत्पादन की स्थिति प्रदेश में अच्छी नहीं है। इसलिए इसके उत्पादन को बढ़ाने के लिए कई चुनौतियां सामने हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए जिला गन्ना अधिकारियों को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। ऐसा करने पर ही प्रदेश में गन्ना उत्पादन में सुधार हो सकेगा।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में प्रशिक्षण के दौरान संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन यह बात कही। उन्होंने कहा कि प्रदेश में औसत गन्ना उपज 60 टन प्रति हेक्टयर है जो कि दक्षिण भारत के अन्य राज्यों से बहुत कम है। दक्षिण भारत में औसत गन्ना उत्पादन 80 से 90 टन प्रति हेक्टयर है, जिसमें चीनी की मात्रा का औसत 9.25 प्रतिशत है, जबकि उप्र में उत्पादन और उसमें चीनी का प्रतिशत दोनों ही अन्य राज्यों से कम है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश को गन्ना उत्पादन के लिए सबसे बड़ा राज्य होने के कारण अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए बेहतर तरीके अपनाने होंगे, क्योंकि वर्ष 2030 तक देश में 550 मिलियन टन गन्ना उत्पादन के साथ-साथ 32 मिलियन टन चीनी उत्पादन की जरूरत पड़ेगी। प्रदेश के प्रत्येक जिला गन्ना अधिकारी को उत्पादन बढ़ाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

प्रशिक्षण के पहले दिन कार्यक्रम में प्रदेश के अधिकांश जनपदों के जिलागन्ना अधिकारियों के साथ गन्ना विकास संस्थान के उपनिदेशक डॉ. एनके कमल और सुचीता सिंह सहित कई अधिकारी मौजूद रहे।

- प्रदेश में गन्ना उत्पादन को बढ़ाने के लिए शुरू हुआ तीन दिवसीय प्रशिक्षण
- देश के बड़े राज्य को अधिक उत्पादन की जिम्मेदारी निभानी होगी

सीख रहे हैं गन्ना उत्पादन की नई तकनीकि

प्रशिक्षण के दौरान वरिष्ठ वैज्ञानिक एके साह द्वारा प्रदेश के विभिन्न जनपदों खीरी, सिद्धार्थ नगर, हापुड़, सीतापुर, देवरिया, गोण्डा, सुल्तानपुर, मुरादाबाद, अमरोहा, बाराबंकी, फैजाबाद, वाराणसी, और रामपुर से आए जिला गन्ना अधिकारियों को अधिक उत्पादन के लिए नयी तकनीकि, उन्नत प्रजातियों की जानकारी, गन्ने से चीनी प्राप्त करने की उत्तम तकनीकि, बुवाई की विधियां, पोषक तत्व प्रबंधन, प्रजाति नियोजन, गन्ना विपणन की व्यवस्था, रोगों के निस्तारण, कटाई के बाद प्रबंधन, गन्ना की खेती के लिए क्षेत्र बढ़ाना, उत्पादन बढ़ाने की संचार विधियां, गन्ना खेती के लिए यंत्रों के बारे में जानकारी दी जा रही है।

लखनऊ, बुधवार, 4 सितम्बर, 2013

गन्ना उत्पादन में डीएसओ का अहम रोल होगा

कार्यक्रम

आइआइएसआर में त्रिदिवसीय गन्ना प्रशिक्षण शुरु

लखनऊ। सूबे में गन्ना एक प्रमुख नकदी फसल है। यह लाखों किसानों के लिए आय का प्रमुख स्त्रोत है। वर्तमान में गन्ना पैदावार की स्थिति अच्छी नहीं है। इसे बेहतर बनाना एक बहुत बड़ी चुनौती है। इस चुनौती को पूरा करने में जिला गन्ना अधिकारी को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

यह बात मंगलवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान(आइआइएसआर) में आयोजित 3 दिवसीय प्रशिक्षण का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने कही। इस अवसर पर डॉ. सोलोमन ने कहा कि प्रदेश में औसत गन्ना उपज 60 टन/हेक्टेयर है। जो राष्ट्रीय औसत (70 टन/हेक्टेयर) और दक्षिण भारत के राज्यों के औसत उपज (80-90 टन/हेक्टेयर) से बहुत कम है और वहां चीनी परता भी 9.25 प्रतिशत है जो काफी कम है। इन कारणों से प्रदेश का गन्ना एवं चीनी उद्योग की स्थिति अच्छी नहीं है। वर्ष 2030 तक देश में 550 मिलियन टन गन्ना, 32 मिलियन टन चीनी उत्पादन करने की आवश्यकता होगी। जिसमें उत्तर प्रदेश को सबसे बड़ा गन्ना उत्पादक राज्य होने के नाते महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। इस दिशा में जिला गन्ना अधिकारियों की जिम्मेदारी और योगदान बेहद अहम है। उम्मीद है। प्रशिक्षण में नवीनतम गन्ना उत्पादन तकनीकों में भाग ले रहे जिला गन्ना अधिकारी पूरी जानकारी प्राप्त करने के बाद अपने-अपने जिलों में गन्ना उत्पादन बेहतर करने में अधिक सार्थक भूमिका निभा पाएंगे।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ए के साह ने कहा कि प्रशिक्षण में जिला गन्ना अधिकारियों को गन्ना उत्पादन के नवीनतम तकनीक जैसे उन्नत प्रजातियां, बेहतर उत्पादन की जानकारियां दी गयीं। *वसं*

राजधानी
वॉयस ऑफ मूवमेंट
www.voiceofmovement.in
2
बुधवार, 4 सितम्बर, 2013

प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन

लखनऊ। प्रदेश में गन्ना एक प्रमुख नकदी फसल है जो की लाखों किसानों के लिए आय का प्रमुख स्रोत है। वर्तमान में गन्ना पैदावार की स्थिति बहुत ज्यादा अच्छी नहीं है और स्थिति को बेहतर बनाना एक बहुत बड़ी चुनौती है। इस चुनौती को पूरा करने में जिला गन्ना अधिकारी को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। यह बात भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ में आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने कही।

HINDUSTAN TIMES, LUCKNOW
WEDNESDAY, SEPTEMBER 04, 2013

Three-day training on sugarcane production technology

LUCKNOW: A three-day training programme on sugarcane production technology kick-started at the Indian Institute of Sugarcane Research from Tuesday. Addressing participants IISR director S Solomon said the training programme was important to empower district cane officers in the latest sugarcane production technology. The training, which was sponsored by Lal Bahadur Shastri Ganna Kisan Sansthan, saw participation by 20 DCOs from districts like Khiri, Sidharthanagar, Hapur, Sitapur, Deoria, Gonda, Sultanpur, Moradabad, Amroha, Barabanki, Faizabad, Varanasi, Rampur. Deputy director NK Kamal and Suchita Singh from Lal Bahadur Shastri Ganna Kisan Sansthan also took part in the programme.